07-09-18 की मुरली से प्रश्नोत्तरी

प्रश्न - अभी तुम्हारी ज्योति जगी है, ज्योति जगना अर्थात् क्या?
उत्तर - बृहस्पति की दशा बैठना।

प्रश्न - बृहस्पति की दशा बैठने से तुम क्या बन जाते हो?
उत्तर - विश्व के मालिक।

प्रश्न - सतयुग में हर घर की विशेषता क्या होगी, कलियुग में हर घर क्या बन गये हैं?
उत्तर-सतयुग में हर घर में खुशियां होंगी। सबकी ज्योति जगी हुई होगी। कलियुग में तो घर-घर में ग़मी, चिंता है। हर घर में अंधियारा है। आत्मा की ज्योति उझाई हुई है।

प्रश्न - बाप आये हैं अपनी ज्योति से सबकी ज्योति जगाने, फिर क्या होगा?
उत्तर - फिर घर-घर में दीवाली होगी।

प्रश्न - बच्चों ने गीत में किसकी महिमा सुनी?
उत्तर - माँ की।

प्रश्न - जगत अम्बा माँ को भी जन्म किसने दिया?
उत्तर - कहेंगे पतित-पावन परमपिता परमात्मा शिव ने दिया।

प्रश्न - फिर महिमा किसकी हो जाती है?
उत्तर -एक ही ज्ञान सागर, पतित-पावन परमपिता परमात्मा शिवबाबा की।

प्रश्न - परमपिता परमात्मा शिवबाबा बैठ बच्चों को कौनसा राज़ समझाते हैं?
उत्तर - अपनी रचना के आदि-मध्य-अन्त और पतितों को पावन बनाने का।

प्रश्न-इस समय पतित राज्य है, जिसको क्या कहा जाता है?
उत्तर - रावण राज्य।

प्रश्न - अभी के उत्सव कैसे हैं?
उत्तर - अन्धश्रधा के उत्सव हैं।

प्रश्न - लंका किसको को कहा जाता है?
उत्तर - सीलॉन को। दिखाते हैं वहाँ सागर पर बन्दरों ने पुल बनाई..... । वास्तव में यह सब हैं दन्त कथायें। ऐसे तो है नहीं कि 10 शीश वाला कोई रावण था, लंका में राज्य करता था। फिर तो उनकी एफीजी लंका में ही जलानी चाहिए।

प्रश्न - रावण को जलाने का रिवाज कहां पर है?
उत्तर - भारत में, और कोई जगह नहीं जलाते।

प्रश्न - सबसे जास्ती उत्सव कौन मनाते हैं?
उत्तर - मैसूर का महाराजा।

प्रश्न - दन्त कथा से किसका प्रेम दिखाई पड़ता है?
उत्तर - मैसूर के महाराजा का।

प्रश्न - एफीजी तो किसका बनाकर जलाया जाता है?
उत्तर - दुश्मन का। जैसे आगे हिटलर का एफीजी बनाकर जलाते थे। दुश्मन तो बहुतों के होते हैं।

प्रश्न - रावण किसका दुश्मन था?
उत्तर -भारतवासियों का दुश्मन था।

प्रश्न - दुश्मन को भी कितनी बार जलाया जाता है?
उत्तर - एक बार।

प्रश्न-भारत को रावण ने क्या बनाया है?
उत्तर - अपवित्र।

प्रश्न - तुम बच्चों को रावण के बारे में किसको समझाना चाहिए?
उत्तर - कमेटी के बड़े जो बनते हैं जैसे मैसूर का महाराजा है, वह बहुत मनाते हैं, उन्हें समझाना चाहिए।

प्रश्न - अभी कौन से राज्यों का राज़ तुमको समझाया गया है?
उत्तर - राम राज्य और रावण राज्य का राज़।

प्रश्न - तुम जानते हो 5 विकार जो कि इस समय सर्वव्यापी हैं, उनको ही क्या कहा जाता है?
उत्तर - रावण।

प्रश्न - जब तुम पावन बन जायेंगे फिर क्या होगा?
उत्तर-रावण सम्प्रदाय को आग लगेगी।
रावण ख़त्म हो जायेगा।

प्रश्न - आत्मा में सतोप्रधानता की जब ताकत थी तो क्या थी?
उत्तर - जागती ज्योत थी।

प्रश्न - पतित बनने से ज्योत कैसी हो गई है?
उत्तर - ज्योति उझा गई है।

प्रश्न - आत्मा पतित बनी है तो कौन सी ताकत नहीं है?
उत्तर - उड़ने की ताकत नहीं रही।

प्रश्न-5 विकारों से आत्मा क्या बन गई?
उत्तर - आइरन एजड बन गई है।

प्रश्न - आत्मा को जागृत करने वाला कौन है?
उत्तर - एक बाप है।

प्रश्न - मनुष्य मरते हैं तो क्या करते हैं?
उत्तर-रात-दिन उनका दीवा जलाते हैं।

प्रश्न-दीवे की बहुत सम्भाल कैसे करते ?
उत्तर - घृत ख़त्म हो जाता है फिर और डालते हैं। आत्माओं का भी ऐसे है। बाप आकर सबकी ज्ञान से ज्योति जगाते हैं।

प्रश्न - ज्योति बुझने में कितना समय लगता है?
उत्तर - 5 हजार वर्ष।

प्रश्न - तुम्हारी अब ज्योति जगी है फिर धीरे-धीरे क्या होगा?
उत्तर - कला कम होती जायेगी। ज्योति उझाई जायेगी।

प्रश्न - अभी हमारी ज्योति जगती है फिर सतयुग में क्या होगा?
उत्तर - घर-घर में सोझरा होगा।

प्रश्न - अभी तो घर-घर में क्या है?
उत्तर - अन्धियारा है।

प्रश्न - सतयुग-त्रेता में हम कैसे थे?
उत्तर-बहुत खुश थे और खुशी मनाते थे।

प्रश्न - तुम्हारे ज्ञान चक्षु कब खुलते हैं?
उत्तर - बाप जब आकर ज्ञान का घृत डालते हैं।

प्रश्न - तुम जानते हो अभी हमारी सारी काया क्या हो गई है?
उत्तर - ख़लास, राहू का ग्रहण लग गया है।

प्रश्न - सबसे कड़ी दशा कौन सी है?
उत्तर - राहू की।

प्रश्न -अभी फिर बृहस्पति की दशा क्यों बैठी है?
उत्तर - क्योंकि अभी विश्व का मालिक बनने के लिए तुम वृक्षपति गुरू द्वारा पुरुषार्थ कर रहे हो।

प्रश्न - मनुष्य लोग किसका गुरू नहीं बनते हैं?
उत्तर - आत्माओं का।

प्रश्न - वृक्षपति कौन है?
उत्तर - परमपिता परमात्मा है।

प्रश्न - यह किसकी पाठशाला है?
उत्तर - रुद्र शिव की।

प्रश्न - भगवानुवाच - मैं तुमको क्या सिखलाता हूँ?
उत्तर - राजयोग।

प्रश्न - कौन से दो कान्ट्रास्ट बताने हैं?
उत्तर - एक है जिस्मानी बाप, एक है रूहानी बाप।

प्रश्न - तुम बच्चों को अब क्या मिली है?
उत्तर - विशालबुद्धि।

प्रश्न - लौकिक पिता को कभी क्या नहीं कहेंगे?
उत्तर - परमपिता। दो बाप का राज़ समझाना बहुत जरूरी है।

प्रश्न - कौन सा बाप कभी बदलता नहीं?
उत्तर - रूहानी बाप।

प्रश्न - जब भक्ति का अन्त होता है तब क्या होता है?
उत्तर - भक्तों को फल देने बाप आते हैं।

प्रश्न - सतयुग में एक ही धर्म होता है, उसको क्या कहेंगे?
उत्तर - वननेस कहेंगे। कहते हैं सभी मिलकर एक हो जाएं।

प्रश्न - भारतवासियों की आयु पहले कितनी थी?
उत्तर - 100 वर्ष, 125 वर्ष थी, अभी तो 40-50 वर्ष भी मुश्किल चलती है। तो आधा-आधा हो न सके।

प्रश्न - अब यह बच्चों को सिद्ध कर बताना है कि हम अभी बेहद के पारलौकिक बाप से क्या ले रहे हैं?
उत्तर - बेहद का वर्सा ले रहे हैं।

प्रश्न   स्वर्ग की स्थापना करने वाले को क्या कहा जाता है?
उत्तर - हेविनली गॉड फादर।

प्रश्न - जब नये घर की स्थापना होती है तब पुराने घर को क्या किया जाता है?
उत्तर - तोड़ा जाता है। लिखा हुआ भी है स्थापना फिर विनाश।

प्रश्न - स्थापना जब पूरी हो जायेगी तब क्या होगा?
उत्तर - विनाश होगा।

प्रश्न - स्थापना करने वाला कौन है?
उत्तर - परमपिता परमात्मा, इस ब्रह्मा द्वारा।

प्रश्न - सूक्ष्मवतनवासी को क्या नहीं कहेंगे?
उत्तर - प्रजापिता नहीं कहेंगे। वहाँ प्रजा होती नहीं, तो जरूर प्रजापिता ब्रह्मा यहाँ होगा।

प्रश्न - किसको समझाने के लिए क्या चाहिए?
उत्तर - एकान्त चाहिए। प्रदर्शनी में तो बहुत हंगामा होता है।

प्रश्न - बरोबर यह राजयोग भी है, राजाई प्राप्त करने की क्या है?
उत्तर - गीता पाठशाला है।

प्रश्न - कृष्ण को क्या नहीं कहेंगे?
उत्तर - सभी आत्माओं का बाप।

प्रश्न - आत्माओं का बाप परमपिता परमात्मा क्या कहते हैं?
उत्तर - मामेकम् याद करो।

प्रश्न - सदा जागती ज्योत रहने के लिए क्या करना है?
उत्तर- स्वयं में ज्ञान का घृत डालते रहना है।

प्रश्न - राहू का ग्रहण उतारने के लिए क्या करना है?
उत्तर - बाप की याद में रहना है।

प्रश्न - हर एक को बेहद के वर्से का अधिकारी कैसे बनाना है?
उत्तर - रूहानी और जिस्मानी दो बाप की पहचान देकर।

वरदान - बिन्दू रूप में स्थित रह सारयुक्त, योगयुक्त, युक्तियुक्त स्वरूप का अनुभव करने वाले सदा समर्थ भव

क्वेश्चन मार्क के टेढ़े रास्ते पर जाने के बजाए हर बात में बिन्दी लगाओ।

बिन्दू रूप में स्थित हो जाओ तो सारयुक्त, योगयुक्त, युक्तियुक्त स्वरूप का अनुभव करेंगे।

स्मृति, बोल और कर्म सब समर्थ हो जायेंगे।

बिना बिन्दू बने विस्तार में गये तो क्यों, क्या के व्यर्थ बोल और कर्म में समय और शक्तियां व्यर्थ गवां देंगे क्योंकि जंगल से निकलना पड़ेगा इसलिए बिन्दू रूप में स्थित रह सर्व कर्मेन्द्रियों को आर्डर प्रमाण चलाओ।

स्लोगन - "बाबा" शब्द की डायमण्ड चाबी साथ रहे तो सर्व खजानों की अनुभूति होती रहेगी